परिणय का सामाजिक जीव विज्ञान

डॉ. डी. बालसुब्रमण्यन

भारतीय मध्यम वर्गीय युवा न सिर्फ आर्थिक संक्रमण से गुज़र रहा है बल्कि एक सामाजिक संक्रमण का भी गवाह है। ज़रा मॉल संस्कृति, नई-नई बॉलीवुड फिल्मों और संगीत, साड़ी के घटते चलन (साड़ी तो अब मम्मी और बहनजी का प्रतीक बन गई है) और बोलने में (या शायद सोचने में भी) अंग्रेज़ी के बढ़ते उपयोग पर गौर कीजिए।

आज अधिकाधिक युवा अपने माता-पिता से दूर रहते हैं, वित्तीय रूप से स्वावलंबी हैं, आपस में मेलजाल रखते हैं; इस तरह से वे कई पारम्परिक प्रथाओं को शिथिल कर रहे हैं। यह सही है कि कई युवाओं के मामले में पालकों का प्रभाव और निर्देश कमज़ोर पड़े हैं मगर यह अब तक आम बात नहीं हुई है। ज़्यादा प्रचलन समझौते और समायोजन का है, जो कभी-कभी तकलीफदेह भी होता है।

इस समायोजन में भारतीय चतुराई इस बात में नज़र आती है कि हम परम्पराओं को जीवित रखने व उनमें जान डालने के लिए अत्यंत सहजता से टेक्नॉलॉजी को अपनाते जा रहे हैं। नेट पर पूजा और भारतमैट्रिमनीडॉटकॉम इसके दो अच्छे उदाहरण हैं। मेरी ज़्यादा रुचि दूसरे वाले उदाहरण में है।

आधुनिक युवा शादी तो जल्दी करना चाहते हैं मगर जीवन साथी का चुनाव खुद करना चाहते हैं। दूसरी ओर, पालक अपने जांचे-परखे तरीकों से वर-वधू का चुनाव करना चाहते हैं। इस संदर्भ में जो तनाव है वह बहुत छिपा हुआ नहीं है। पालक मानते हैं कि वे जानते हैं कि उनके बच्चों के लिए अच्छा क्या है, जबकि युवा पुराने फैशन से बंधना नहीं चाहते। इस तनातनी में भारतमैट्रिमनीडॉटकॉम उपयोगी नज़र आने लगता है।

ये वैवाहिक साइट्स क्षेत्रवार, भाषा-आधारित, समुदाय-आधारित संस्करणों में उपलब्ध हैं। कुछ साइट्स तो एक कदम आगे जाकर अपने ग्राहकों के लिए 'मेगास्वयंवरम' की व्यवस्था करने को तत्पर हैं। इस व्यवस्था में वे वर और वधू पक्षों को आमने-सामने लाती हैं ताकि वे अगला कदम उठा सकें।

स्वयंवरम नाम थोड़ा भ्रामक है क्योंकि दोनों पक्षों ने कुछ चुनाव तो वेबसाइट पर ही कर लिया है। इसमें पालकों और युवाओं की कसौटियां पूरी हो चुकी हैं, उसके बाद ही वर व वधू पक्ष को एक हॉल में साथ लाया जाता है ताकि वे बातचीत कर सकें।

समझौते और समायोजन की भारतीय चतुराई यहां

अपने चरम पर होती है। एक ही सांस में यह मुलाकात 'अरेंज्ड' भी है और 'मुक्त पसंद' भी। हैदराबाद में आयोजित ऐसे एक मेगास्वयंवरम में कम्मा, रेड्डी, ब्राह्मण, कापू, बलिजा, नायडू और आर्य वैश्य समुदायों के करीब 5000 तेलुगु वर-वधुओं को एक साथ लाया गया था।

इस तरह के आयोजन में हम यह तो जानते ही हैं कि पालक किस चीज़ की तलाश में होते हैं। मगर युवा लोग क्या देखते हैं? क्या वे अपनी पसंद में 'पाश्चात्य मार्ग' पर जाते हैं या वे परिवार की इच्छाओं को भी जगह देते हैं? जीवनसाथी के बारे में वे जो निर्णय लेते हैं, उसके विश्लेषण से हमें यह समझ में आ सकता है कि अपने भावी जीवन के इस महत्वपूर्ण फैसले में उनका दिमाग कैसे काम करता है।

इन्सानों को छोड़ें दें , तो जंतुओं में प्रणय साथी के चयन को लेकर जीव वैज्ञानिक काफी लम्बे समय से अध्ययन करते आ रहे हैं। सपाट शब्दों में कहें, तो जैव विकास की दृष्टि से अपने जीन्स, परिवार, समुदाय व प्रजाति को मिश्रित करने व फैलाने के लिए प्रणय साथी की ज़रूरत होती है। नर अपनी जिनेटिक उत्कृष्टता और शक्ति का 'विज्ञापन' करते हैं जबकि मादा यह प्रदर्शित करती है कि वह स्वस्थ संतानों को जन्म दे सकती है, उनका पालन-पोषण कर सकती है। 'मैचिस्मो' यानी मर्दानगी और बहादुरी का अतिशयोक्ति पूर्ण प्रदर्शन इस 'विज्ञापन' के अंग होते हैं।

जैसे, अपने मनमोहक पंख के साथ नाचते मोर (मोरनी में ऐसे पंख नहीं होते) के सामने यह खतरा होता है कि यदि कोई शिकारी आ गया तो उसे भागने में कठिनाई होती है। इसी प्रकार से नर हिरन के सिर पर लंबे-लंबे सींग भी इसी तरह की मुश्किलें पेश करते हैं। यदि जैव विकास के क्रम में आगे बढ़ें तो इन्सान भी सेक्स आकर्षण से मोहित होते हैं - अर्नोल्ड श्वारज़ेनेगर की छलकती मछलियां और सोफिया लॉरेन की मांसलता। मगर आम तौर पर मर्दानगी का स्त्री समकक्ष 'मैरिएनिस्मो' इतना भड़कीला नहीं बल्कि बारीक होता है। फेरोमोन्स और इत्र आदि इस काम में उपयुक्त होते हैं।

तो आधुनिक मध्यम वर्गीय युवा अपने साथी में किस चीज़ की तलाश करता है? कई युवा तो पाश्चात्य मार्ग पर चलना पसंद करेंगे और चाहेंगे कि उनके परिवार इसे स्वीकार करें। तो सवाल यह है कि क्या पाश्चात्य तरीका जैविक दृष्टि से, जैव विकास की दृष्टि से उपयुक्त है या क्या सांस्कृतिक पक्ष जैविक पक्ष पर हावी रहता है?

प्रोसीडिंग्स ऑफ दी नेशनल एकेडमी ऑफ साइन्सेज़ में प्रकाशित दो ताज़ा शोध पत्रों में इस मामले पर गौर किया गया है। पहला शोध पत्र पी.एम. बस्टन और एस.टी. एम्लेन का है। शोधकर्ताओं ने न्यूयॉर्क में इथाका के 18-24 वर्ष उम्र के करीब 1000 लोगों से दो प्रश्नावलियां भरवाई थीं। इनमें महिला व पुरुष दोनों थे।

पहली प्रश्नावली में इन लोगों को यह बताना था कि दिए गए 10 गुणों के आधार पर वे एक लम्बे समय के जीवन साथी को कहां रखते हैं। ये गुण निम्नलिखित थेः वित्तीय संसाधन, सामाजिक हैसियत, तंदुरुस्ती, शारीरिक आकर्षण, वफादारी, बच्चों की चाह, पालकीय गुण, निष्ठा, और पारिवारिक सम्बंधों (पालकों और भाई-बहनों से निकटता) की मज़बूती। दूसरी प्रश्नावली में उन्हें इन 10 गुणों के आधार पर खुद का आकलन करना था।

परिणाम चौंकाने वाले थे। जिन स्त्री-पुरुषों ने खुद का उच्च आकलन किया, वे उसी तरह के उच्च दर्जे की अपेक्षा अपने जीवन साथी में भी करते थे। उपरोक्त 10 गुणों में वे अपने समान ही साथी चाहते थे।

दूसरे शब्दों में 'असमान के बीच आकर्षण' या 'प्रजनन क्षमता का आकर्षण' की बजाय नियम यह बनता लगता है कि 'समान के बीच आकर्षण' होता है। सर्वे में सम्पत्ति और हैसियत, पारिवारिक निकटता, शारीरिक आकर्षण और यौन-वफादारी जैसे जैव विकास की दृष्टि से उपयोगी गुणों को बहुत महत्वपूर्ण नहीं माना गया था।

पसंद 'पूरक गुणों' की नहीं बल्कि 'अनुकृति' की रही। स्वयं का ही वरण किया गया था। नार्सिसस ज़रूर बहुत खुश होता।

एक मायने में इसका खंडन दूसरे शोध पत्र में आया।

पी.एम. टॉड के नेतृत्व में काम कर रहे इस समूह में जर्मनी, यू.के. व यू.एस. के वैज्ञानिक शामिल थे। उन्होंने पाया कि प्रश्नावली के जवाब और साथी की पसंद बदल जाती है, यदि जवाब देने के बाद वालंटियर्स को आपस में मिलने का मौका दिया जाए।

रूबरू मुलाकात से पहले भरी गई प्रश्नावलियां तो 'समान के बीच आकर्षण' की तर्ज़ पर चलीं लेकिन मुलाकात (स्पीड डेटिंग) के बाद परिणाम एकदम बदल गए और उनमें जैव विकास के अनुसार अपेक्षित रुझान दिखने लगे।

शोधकर्ताओं का निष्कर्ष है कि स्वतः रिपोर्ट के आधार पर जो संज्ञान प्रक्रिया नज़र आती है उसके विपरीत वास्तविक साथी से रूबरू मुलाकात के बाद जो कुछ नज़र आता है वह जैव विकास के पालकत्व निवेश के सिद्धांत के अनुरूप है। डार्विन इसका अनुमोदन करते।

स्पीड डेटिंग एक प्रचलित सामाजिक आयोजन है जिसमें स्त्री और पुरुष मिलते हैं, बातचीत करते हैं और तय करते हैं कि वे इस मेलजोल को आगे बढ़ाना चाहते हैं या नहीं।

एक तरह से देखें तो हैदराबाद में आयोजित महास्वयंवरम इसी तरह का भारतीय शैली का आयोजन कहा जा सकता है। यह जानना रोचक होगा कि इसके बाद कितनी शादियां अंततः तय हुई थीं। उससे हमें संकेत मिलेगा कि भारत की आज की युवा पीढ़ी में किस तरह की संज्ञान प्रक्रिया चल रही है। तो यह एक बढ़िया अनुसंधान कार्य हो सकता है। ***(स्रोत फीचर्स)***